IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

शहडोल संभाग में साक्षरता एवं शिक्षा के आयम : एक भौगोलिक अध्ययन

Jiyalal Rathore[1] and Prof. Shivkumar Dubey[2]
Research Scholor, Department of Geography[1]
Professor, Department of Geography[2]
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India
rathaur1989@rediffmail.com

Abstract: भारत देश ग्रामों के विकास के लिए तात्पर्य है। इससे क्षेत्रीय विकास की योजनाओं और शिक्षा के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करता हे। इस प्रकार की आधारभूत सुविधाओं में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण हैं शिक्षा मानव को जागरूक ही नही बल्कि साक्षर भी बनाती है। शिक्षा से जागरूक व्यक्ति अन्य सुविधाओं को आसानी से प्राप्त कर लेता है। इन्हीं विकास योजनाओं के आधार पर लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का प्रतिरूप तैयार होता है। इन्हीं अर्थो में सामाजिक और भौतिक अस्तित्व की रचना कर आर्थिक विकास को योगदान दिया गया है। फिर भी इसके उपरान्त भौगोलिक वातावरण मानव के जीवन में एक अहम भूमिका निभाता है। इसे परिणाम स्वरूप शैक्षणिक विकास ही सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए योगदान देता है।1 आर.पी. मिश्र2 के मतानुसार विकास की योजना के आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन से संस्थागत शैक्षणिक ढाँचे का निर्माण होता है। इसी से समाज में परिर्वतन की लहर दिखाई देती है। किसी भी राष्ट्र, राज्य ,संभाग, जिला और गाँव हेतु शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। इन्हीं के परिसााम स्वरूप व्यक्ति का जीवन पशु से भिन्न है क्योंकि शिक्षा मनुष्य को शिक्षित ही नहीं बल्कि सभ्य और संस्कारवान बनाती है। यही शिक्षा व्यवस्था के अभाव में मानव के कृत्य पशु से भी बत्तर हो जाता है। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र की प्रगति का सूचक माना जा सकता है। यदि देश की उन्नति पूर्ण बनाना है। तो सबसे पहले शिक्षा का विकास करना आवश्यक है। शिक्षा समाज में एक सामाजिक प्रक्रिया को जन्म देती है। भौगोलि वातावरण को सुचारू रूप प्रदान करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आजादी के बाद समग्र राष्ट्रीय विकास की दृष्टिकोणों के आधार पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा शिक्षा विकास के सतत् धारा में प्रगति की ओर अग्रसर है। इन्हीं सम्बन्धी कार्यो के प्रति प्रगति का विकास स्वयं में एक आईना का कार्य कर रहा है।

मुख्य शब्दः साक्षरता, शिक्षा, कालगुणवत्ता, अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, सौन्दर्य विकास

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

प्रस्तावना:

शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामग्री का संकलन किया गया है। इसके उपरान्त व्यक्तिगत सर्वेक्षण ओर संकलन के द्वारा शोध पत्र का निर्माण किया गया हैं जिसमें शिक्षा के स्तर का अध्ययन किया गया है। इस हेतु शहडोल संभाग से प्रदत्त आकड़ों का संकलन करने के उपरान्त ही नवीन तथ्यों को समाहित किया गया है। इसेक साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी अध्ययन किया गया है।

समस्या:

1. यह जनजातीय बाहुन्य क्षेत्र होने के कारण शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गा है। जिसमें शिक्षा संबंधी विकास नहीं हो पाया है। इस क्षेत्र के लोग भी कम शिक्षित है। जब तक इनकों शिक्षा नहीं प्रदान की जाएगी तब तक इनका विकास सम्भव नहीं है। शिक्षा पर आधारित नीतियों का क्रियान्वयन शिक्षा संस्थाओं के विकास के आधार पर हुआ हे।
2. शिक्षा विकास के सम्बन्ध में बनाई जाने वाली नीतियों का आसर अभी तक ऐसा लगता है।
3. अनुसूचित जाति और जनजाति को संविधान में प्रदत्त आरक्षण की सुविधाओं से जनजातीय समूह को रोजगार उपलब्ध कराने में मदद मिलनी चाहिए। जबकि यह समस्या विकराल रूप ले रही है।

उद्देश्य

1. शिक्षा का विकास नहीं हुआ है। इसी कारण शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु सम्पूर्ण देश भागीदारी निभा रहा है।
2. इनके शैक्षणिक वातावरण में परिवर्तन बहुत ही आवश्यक होता है। इससे लोगों की विचारधारा में विस्तृत परिवर्तन आयेगा।
3. आधारभूत सुविधाओं से किसी भी संभाग के सामाजिक आर्थिक क्रियायें पूर्णतः विकास की गति को बाधित नहीं करती हे।
4. योजना आयोग के द्वारा सातवीं पंचवर्षीय योजनाओं के परिणाम स्वरूप ही इनकी आधारभूत संरचना के क्षेत्र के विकास को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

सारणी क्र. 1: शहडोल संभाग : अनुसूचित जनजाति विकासखण्डवार जनसंख्या का वितरण

जनगणना वर्ष–2011

क्र.	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	योग	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	ब्यौहारी	83120	44.17	42072	50.61	41048	49.38
2	जयसिंहनगर	94432	51.02	47054	49.82	47378	50.17
3	गोहपारू	67292	62.22	33105	49.19	34187	50.80
4	सोहगपुर	99938	53.36	50043	50.05	49895	49.94
5	बुढ़ार	102620	57.70	50533	49.24	52087	50.75
6	कोतमा	23186	39.88	11334	48.88	11852	51.11
7	पुष्पराजगढ़	173123	78.12	86195	49.78	86928	50.21
8	अनूपपुर	41262	39.18	20298	49.19	20964	50.80
9	जैतहरी	80056	50.35	39536	49.38	40520	50.61
10	मानपुर	89756	39.19	45391	50.57	44365	49.42
11	करकेली	130603	56.15	66012	50.54	64591	49.45
12	पाली	54415	74.89	27503	50.54	26912	49.45
	शहडोल संभाग	**1039803**	**50.02**	**519076**	**49.92**	**520727**	**50.07**
योग	**मध्यप्रदेश**	**15316784**	**29.14**	**7719404**	**50.39**	**7597380**	**43.88**
	भारत	**104281034**	**8.61**	**52409823**	**50.25**	**51871211**	**49.74**

Source: Census of India, 2011, District Census Hand Book, Distirict Shahdol, Umariya & Anuppur

सारणी क्रमांक–1 के अनुसार अनुसूचित जनजाति विकासखण्डवार जनसंख्या का वितरण वर्ष 2011 के अनुसार शहडोल संभाग की कुल जनसंख्या का प्रतिशत 50.2 प्रतिशत है। जिसमें म.प्र. की

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

कुल जनसंख्या प्रतिशत 29.4 है। अनुसूचित जनजाति की पुरूष की जनसंख्या प्रतिशत 50.39 है एवं महिलाओं की 43.88 प्रतिशत है। विकासखण्ड ब्यौहारी में पुरूष 50.61 प्रतिशत महिला 49.68 प्रतिशत सोहागपुर में पुरूष 50.5 प्रतिशत एवं महिला 49.94 प्रतिशत, मानपुर, पाली करकेली में अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या का प्रतिशत है। जिसमें महिलाओं की जनसंख्या कोतमा, बुढ़ार पुष्पराजगढ़ जैतहरी विकासखण्ड में वृद्धि हुई है।

सारणी 2: शहडोल संभाग : अनुसूचित जनजाति विकासखण्डवार साक्षरता का वितरण जनगणना वर्ष 1991

क्र.	विकासखण्ड	कुल साक्षर व्यक्ति	कुल साक्षरता प्रतिशत	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	ब्यौहारी	6277	11.30	5674	90.39	603	9.06
2	जयसिंहनगर	8628	12.92	7183	83.25	1445	16.74
3	गोहपारू	6665	13.21	5623	84.36	1042	15.63
4	सोहगपुर	5394	77.32	4866	90.21	528	9.78
5	बुढ़ार	10895	13.21	9076	83.30	1819	16.69
6	कोतमा	2423	13.88	1993	82.25	430	17.74
7	पुष्पराजगढ़	23751	18.01	18377	77.37	5374	22.62
8	अनूपपुर	5679	17.60	4475	80.55	1204	21.20
9	जैतहरी	8423	13.32	6992	83.01	1431	16.98
10	मानपुर	5906	10.68	5103	86.40	803	13.59
11	करकेली	10209	12.17	8815	86.34	1394	13.65
12	पाली	5640	14.40	4750	84.21	890	15.78
	शहडोल संभाग	**99890**	**13.38**	**82927**	**83.01**	**16963**	**16.98**
योग	**मध्यप्रदेश**	**2332512**	**15.92**	**17769043**	**75.86**	**555569**	**23.82**
	भारत						

Source: Census of India, 2011, District Census Hand Book, Distirict Shahdol, Umariya & Anuppur

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

सारणी क्रमाक 2 के अनुसार अनुसूचित जनजाति विकासखण्डवार साक्षरता का वितरण वर्ष 2011 के अनुसार शहडोल संभाग में कुल साक्षरता 13.38 प्रंतिशत जिसमें पुरूष 83.01 व महिला 16.98 उसी प्रकार मध्यप्रदेश में जनजातीय की कुल साक्षरता 15.92 पुरूष 75.86 व महिला 23.82 है।क्यो कि महिलाओं की शिक्षा व संसाधनो का अभाव के कारण उनकी शिक्षा में कमी का अभाव देखने को मिला। ताकि सभी विकासखण्ड में सुविधाओं की कमीं के कारण दूर दूर तक सुविधा नहीं थी जिससे महिलाएँ शिक्षा से वंचित रही।

समाधान

शिक्षा के विकास का माध्यम शैक्षणिक संस्थाएँ होती हे। इन्हें ही प्राचीन काल से शिक्षा संस्थान के रूप में विकसित किया गया है। इसका परिणाम यह होता है।[4] कि गुरूकुल या आश्रम हुआ करते थे। जहाँ पर विभिन्न विषयों की शिक्षा आचार्यो द्वारा शिष्य द्वारा दी जाती थी। जबकि वर्तमान में गुरूकुल का स्थान शासकीय एवं अशासकीय रूपों में परिवर्तित हो जाता है। यहाँ तक शिक्षा के विभिन्न प्रकारों का विस्तार शिक्षा आदि के द्वारा ही सम्भव होता है।[5]

शिक्षा के विकास हेतु आवश्यक सामग्री जिसमें फर्नीचर, कुर्सी, टेबिल, ब्लैकबोर्ड, स्टूल, टॉट–पट्टी, चाक, स्टेशनरी आदि के द्वारा ही सामग्री के प्रयोग किया जाता है। इससे शहडोल संभाग में जनजातीय परियोजना के अन्तर्गत आवासीय विद्यालय भी होते है। जिनकी प्रतिपूर्ति राज्य शासन द्वारा की जाती हे।[7]

प्राथमिक कक्षा तक किसी भी प्रकार के प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं होती है। जबकि कक्षा 6वीं से 12वीं तक सामान्य लैब के द्वारा कार्य को सम्पादित किया जाता है। प्रयोगशाला की दृष्टि से अध्ययन हेतु वैज्ञानिक प्रणाली को समझने में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष

शिक्षा नीतियों के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। पुस्तकालय ही ज्ञान के भण्डार है। इन्हीं के माध्यम से शिक्षा के स्तर का विकास किया जाता है। इससे विद्यालयों न तो अध्ययन सम्भव है। पुस्तकालय के द्वारा शिक्षा केन्द्रों की प्रमुख समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

शहडोल सम्भाग में जनजातीय बाहुल्य जनसंख्या होने के परिणाम स्वरूप जनसंख्या के प्रधान भू–भाग में एक दशक के पूर्व में शिक्षा को प्रदान करने वाली संस्थाओं का आभाव रहा था। इससे शहडोल में पूर्व माध्यम और माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने से शिक्षा के साक्षारता दर में निश्चित ही वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पी.आर. चौहान एवं महत्तम प्रसाद, भारत का वृहद भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन दाउदपुर, गोरखपुर, 2000, पृ. 10
2. श्रीवास्तव एवं अन्य, प्रादेशिक नियोजन एवं संतुलित विकास बसुन्धरा प्रकाश, गोरखपुर, 1996, पृ. 15
3. डॉ. प्रमिला कुमार, मध्यप्रदेश, एक भौगोलिक अध्ययन, द्वितीय संस्करण, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, (म.प्र.) पृ. 25
4. एस.डी. कौशिक एवं शर्मा ए.के. भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधि तंत्र, रस्तोगी प्रकाशन, शिवाजी रोड, मेरठ, सप्तम संस्करण 1990, पृ. 23
5. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, 2011, शहडोल संभाग
6. गजेटियर, शहडोल जिला
7. डॉ. मेमोरिया चतुर्भुज, जनसंख्या भूगोल साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 29

Web Site:

[1]. www.cences.2011.co.in

[2]. www.data.gov.in

[3]. www.shahdolpart.A.gov.in